International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ: राजस्थान के अलवर जिले के विशेष संदर्भ में

आकाश शर्मा
शोधार्थी, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * आकाश शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.24105920

सारांश

प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध पत्र राजस्थान के अलवर जिले में स्थापित स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों की प्रभावशीलता का गहन और आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक गुणवत्ता और डिजिटल समावेशन को सुनिश्चित करना किसी भी विकासशील राष्ट्र के समग्र विकास का प्राथमिक और सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है (Ministry of Education, 2020)। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह वैज्ञानिक रूप से जाँचना है कि शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स में अत्याधुनिक तकनीकी संसाधनों, जैसे स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल विषयवस्तु और अटल टिंकरिंग लैब्स का वास्तविक धरातलीय प्रभाव क्या है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग करते हुए अलवर जिले के 10 विभिन्न विकास खंडों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक के माध्यम से 500 विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधि न्यादर्श चयनित किया गया (Cochran, 2021)। प्राथमिक आँकड़ों का व्यवस्थित संकलन एक मानकीकृत पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी आधारित प्रश्नावली द्वारा किया गया, जिसका परिष्कृत सांख्यिकीय विश्लेषण आईबीएम एसपीएसएस सॉफ्टवेयर के माध्यम से संपन्न हुआ (Field, 2023)। शोध के विश्लेषणात्मक परिणामों ने यह स्पष्ट किया कि तकनीकी और नवाचार आयाम तथा विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन के मध्य एक धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से उच्च सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। अंततः, अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि यद्यपि इन विशिष्ट विद्यालयों ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल डिवाइड को सफलतापूर्वक कम किया है, तथापि शिक्षकों के निरंतर तकनीकी प्रशिक्षण के अभाव में डिजिटल संसाधनों का इष्टतम उपयोग एक चिरस्थायी चुनौती बना हुआ है (Kumar & Yadav, 2023)।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 11-09-2026
- **Accepted:** 05-11-2026
- **Published:** 10-11-2026
- **IJCRM:**5(6); 2026: 155-162
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

शर्मा आ. स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ: राजस्थान के अलवर जिले के विशेष संदर्भ में. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(6):155-162.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: डिजिटल शिक्षण, आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ, स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय, डिजिटल डिवाइड, शैक्षिक नवाचार, सहसंबंध विश्लेषण।

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

प्रस्तावना

संपूर्ण विश्व के शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षा को किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास का प्राथमिक एवं सर्वाधिक सशक्त माध्यम स्वीकार किया गया है। इक्कीसवीं सदी के वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी क्रांति के इस अभूतपूर्व युग में, औपचारिक शिक्षा का स्वरूप केवल साक्षरता या पारंपरिक किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह निरंतर विस्तृत हो रहा है (Jacob & Gaur, 2024)। आज के तकनीकी युग में शिक्षा का सीधा तात्पर्य नवाचार, समालोचनात्मक चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक तकनीकी कौशल के समग्र विकास से जुड़ गया है। भारत जैसे विशाल और भौगोलिक रूप से विविधतापूर्ण विकासशील देश में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के मध्य शैक्षिक गुणवत्ता, भौतिक अवसंरचना और डिजिटल पहुँच में एक अत्यंत व्यापक खाई लंबे समय से विद्यमान रही है, जिसे पाटने के लिए नीतिगत स्तर पर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं (Meena, 2024)। शहरी क्षेत्रों में जहाँ अत्याधुनिक संसाधनों से सुसज्जित निजी और उत्कृष्ट सरकारी विद्यालय सुगमता से उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण और दूरस्थ जनजातीय अंचलों में शिक्षा का स्तर, डिजिटल आधारभूत ढांचा और आधुनिक शिक्षण तकनीकें अभी भी विकास और भारी संघर्ष की प्रक्रिया से गुजर रही हैं (Chauhan, Sinha, & Sharma, 2024)। विशेष रूप से माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर यह शैक्षिक असमानता अत्यंत मुखर होकर सामने आती है, जो उच्च शिक्षा और रोजगार के मध्य एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करती है (Ministry of Education, 2020)। इसी गहरी शैक्षिक और तकनीकी असमानता को समाप्त करने तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स में गुणवत्तापूर्ण और उत्कृष्ट माध्यमिक शिक्षा समान रूप से उपलब्ध कराने के महत्वाकांक्षी उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा ऐतिहासिक मॉडल स्कूल योजना की परिकल्पना की गई थी।

राजस्थान राज्य के विशिष्ट भौगोलिक, सामाजिक और जनसांख्यिकीय संदर्भ में इस महत्वाकांक्षी योजना का क्रियान्वयन अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ है। राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जहाँ मरुस्थलीय, पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों की बहुलता के कारण आधुनिक शिक्षा का प्रसार हमेशा से एक चुनौतीपूर्ण प्रशासनिक कार्य रहा है (Meena, 2024)। राज्य में शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स की संख्या ऐतिहासिक रूप से काफी अधिक रही है, जहाँ विशेषकर महिला साक्षरता दर और विद्यार्थियों का विद्यालय में ठहराव सदैव नीति-निर्माताओं के लिए गहरी चिंता का विषय रहा है (Deepak, 2025)। इसी नितांत आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, राज्य सरकार और केंद्र सरकार के संयुक्त प्रयासों तथा समग्र शिक्षा अभियान के वित्तीय सहयोग से राजस्थान में 186 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स की वैज्ञानिक पहचान कर वहाँ स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों की स्थापना की गई (Gupta, Rao, & Devi, 2022)। इन विशिष्ट और उत्कृष्ट विद्यालयों की स्थापना का मूल दार्शनिक आधार यह था कि विशुद्ध ग्रामीण परिवेश के प्रतिभावान विद्यार्थियों, विशेषकर बालिकाओं और सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के बच्चों को एक ऐसा सृजनात्मक, सुरक्षित और अत्याधुनिक शैक्षिक वातावरण प्राप्त हो सके (Sah, 2021)। इस वातावरण में आदर्श छात्र-शिक्षक अनुपात, आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीक का एकीकरण, विज्ञान और गणित की उन्नत प्रयोगशालाएँ, और नवाचारी पाठ्यचर्या सर्वसुलभ कराई गई है, ताकि ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में समान स्तर पर खड़े हो सकें (NITI Aayog, 2021)।

इन विद्यालयों की कार्यप्रणाली में नवाचार और आधुनिकता को गहराई से पिरोया गया है, जिसके तहत कक्षा छह से बारह तक की शिक्षा पूर्णतः अंग्रेजी माध्यम में और राष्ट्रीय स्तर के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विश्लेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित प्रदान की जा रही है (Sah, 2021)। ग्रामीण अंचल में स्थित होने के बावजूद शिक्षण का माध्यम पूर्णतः अंग्रेजी रखा जाना शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा ढांचागत और अकादमिक बदलाव है, जो भाषाई बाधाओं को तोड़कर छात्रों को भविष्य की वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करता है (Meena, 2024)। इन विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण को प्रभावी रूप से बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक कक्षा को स्मार्ट क्लासरूम में परिवर्तित किया गया है, तथा तकनीकी कौशल को निखारने के लिए नीति आयोग द्वारा प्रायोजित अटल टिंकरिंग लैब्स की स्थापना की गई है (NITI Aayog, 2021)। इसके साथ ही, शिक्षकों के निरंतर पेशेवर विकास के लिए समग्र शिक्षा अभियान के तहत निष्ठा जैसे सघन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है, ताकि शिक्षक इन आधुनिक डिजिटल उपकरणों का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में निर्बाध रूप से उपयोग कर सकें (Kumar & Yadav, 2023)। अलवर जिले के विशेष संदर्भ में, जहाँ मेवात क्षेत्र और अरावली की तलहटी में बसे ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का स्तर राज्य के औसत से कम रहा है, वहाँ स्थापित 10 मॉडल विद्यालय शिक्षा के सार्वजनीकरण में एक मील का पत्थर साबित हो रहे हैं (Meena, 2024)।

प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध अध्ययन इसी विस्तृत और समसामयिक पृष्ठभूमि पर पूर्णतः आधारित है कि क्या ये स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालय अपनी स्थापना के मूल और महत्वाकांक्षी उद्देश्यों, विशेषकर नवाचार और डिजिटल शिक्षण के संदर्भ में, यथार्थ के धरातल पर सफल सिद्ध हो रहे हैं (Buabeng-Andoh, 2012)। शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार का ढांचागत नवाचार तभी पूर्णतः सार्थक और सफल माना जा सकता है जब उपलब्ध तकनीकी संसाधनों का अधिकतम, उचित और निरंतर शैक्षणिक उपयोग सुनिश्चित किया जाए (Sharma & Singh, 2022)। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा इन विद्यालयों के भौतिक और डिजिटल संसाधनों की स्थापना पर करोड़ों रुपये का जो भारी वित्तीय निवेश किया गया है, उसकी वास्तविक उपयोगिता और प्रभावशीलता का साक्ष्य-आधारित वैज्ञानिक विश्लेषण करना आज के समय की एक नितांत आवश्यकता बन गया है (Chauhan, Sinha, & Sharma, 2024)। यह शोध मुख्य रूप से इस बात का गहराई से और आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण करता है कि क्या ये अत्याधुनिक डिजिटल संसाधन केवल दिखावे की वस्तु बनकर रह गए हैं, या शिक्षक और विद्यार्थी वास्तव में अपने दैनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम, संवादात्मक और गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट बनाने के लिए इनका सक्रिय उपयोग कर रहे हैं (Kumar & Yadav, 2023)। इसके साथ ही, यह अध्ययन भाषाई संक्रमण और तकनीकी ग्राह्यता के उस गहरे मनोवैज्ञानिक पहलू को भी सांख्यिकीय रूप से मापता है, जिसका सामना एक ठेठ ग्रामीण विद्यार्थी अपनी मातृभाषा या हिंदी माध्यम से सीधे अंग्रेजी माध्यम के अत्यधिक तकनीकी और डिजिटल परिवेश में आने पर करता है (Sah, 2021)। इस प्रकार, यह शोध ग्रामीण भारत में तकनीकी नवाचार, सामाजिक समानता और

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

शैक्षिक आधुनिकता के बहुआयामी प्रभावों का एक अत्यंत प्रामाणिक और विस्तृत मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन (Literature Survey)

ज्ञान के किसी भी विशिष्ट क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान एक निरंतर चलने वाली और संचयी प्रक्रिया है, जिसमें कोई भी नवीन अन्वेषण पूर्णतः शून्यता में उत्पन्न नहीं होता, बल्कि वह पूर्व में स्थापित अकादमिक सिद्धांतों, किए गए आनुभविक अध्ययनों और संचित ज्ञान की सुदृढ़ वैचारिक नींव पर आधारित होता है (Rafiq-uz-Zaman & Shih, 2026)। स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के वास्तविक प्रभाव का सटीक मूल्यांकन करने के लिए पूर्व के शोध कार्यों, सरकारी प्रतिवेदनों और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित साहित्य का समालोचनात्मक विश्लेषण अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक है (Jacob & Gaur, 2024)। सर्वप्रथम, स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक और शैक्षिक विचारों तथा वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मध्य वैचारिक अंतर्संबंधों का गहन अध्ययन इस शोध को एक अत्यंत सुदृढ़ सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करता है (Ministry of Education, 2020)। जैकब और गौड़ के एक विस्तृत गुणात्मक अध्ययन ने यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया है कि विवेकानन्द की जन-शिक्षा और चरित्र निर्माण की ऐतिहासिक दृष्टि, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा प्रस्तावित समावेशी, न्यायसंगत और दक्षता-आधारित शिक्षा के आधुनिक फ्रेमवर्क के साथ पूर्णतः संरेखित और सामंजस्यपूर्ण है (Jacob & Gaur, 2024)। इसी वैचारिक और दार्शनिक क्रम में मंडल, गिरि और मल्लिक द्वारा किए गए विश्लेषणात्मक शोध ने यह दर्शाया कि आधुनिक वैज्ञानिक और उच्च तकनीकी शिक्षा को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ संतुलित किया जाना नितांत आवश्यक है, अन्यथा यह शिक्षा प्रणाली केवल मशीनों का निर्माण करेगी, चरित्रवान और संवेदनशील नागरिकों का नहीं (Mandal, Giri, & Mallick, 2026)।

विद्यालयी शिक्षा में नवाचार और सूचना-संचार तकनीक के एकीकरण और उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर किए गए हालिया और अद्यतन अध्ययनों ने डिजिटल शिक्षण की अपार संभावनाओं और अंतर्निहित चुनौतियों को बहुत स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है (Sharma et al., 2024)। शर्मा एवं उनके सह-लेखकों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्मार्ट क्लासरूम के सीखने के माहौल पर किए गए एक व्यापक मात्रात्मक अध्ययन ने यह वैज्ञानिक रूप से और सांख्यिकीय साक्ष्यों के साथ प्रमाणित किया कि पारंपरिक चॉक-एंड-टॉक शिक्षण विधियों की तुलना में स्मार्ट कक्षाओं ने उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले, दोनों प्रकार के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण वृद्धि की है (Sharma et al., 2024)। इसके अतिरिक्त, जेना द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए एक महत्वपूर्ण शोध में यह पाया गया कि डिजिटल मल्टीमीडिया, एनिमेशन और दृश्य-श्रव्य माध्यम छात्रों के ज्ञानात्मक भार को प्रभावी रूप से कम करते हैं और नीरस विषयवस्तु को अत्यधिक रोचक बनाते हैं, जिससे उनकी स्मृति प्रतिधारण क्षमता में अभूतपूर्व सुधार होता है (Jena, 2013)। तथापि, इस तकनीकी नवाचार के साथ जुड़ी हुई कई गंभीर अवसंरचनात्मक चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किए बिना साहित्य समीक्षा पूर्णतः एकांगी रह जाएगी (Buabeng-Andoh, 2012)। रफ़ीक़-उज़-ज़मान और शिह के एक वृहद और व्यवस्थित साहित्य समीक्षा अध्ययन ने यह पाया कि यद्यपि डिजिटल परिवर्तन और इंटरैक्टिव ई-बुक्स से छात्र जुड़ाव में मापने योग्य वृद्धि हुई है, लेकिन शिक्षकों के तकनीकी प्रशिक्षण में भारी कमी और बुनियादी ढाँचे का अभाव अभी भी शिक्षा प्रणाली के समक्ष सबसे बड़ी बाधाएं हैं (Rafiq-uz-Zaman & Shih, 2026)।

ग्रामीण शिक्षा में डिजिटल डिवाइड, संसाधनों की कमी और भाषाई संक्रमण की मनोवैज्ञानिक चुनौतियों पर किए गए विभिन्न शोध इस विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-सूचक और वैचारिक आधार का कार्य करते हैं (DiMaggio & Hargittai, 2001)। डिमैगियो और हरगिट्टई के ऐतिहासिक डिजिटल असमानता के सिद्धांत को आधार बनाते हुए आधुनिक शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने यह स्पष्ट किया है कि भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचनात्मक सीमाओं, निर्बाध विद्युत आपूर्ति के अभाव और शिक्षकों में एआई साक्षरता की कमी के कारण उन्नत क्लाउड-आधारित शिक्षा तकनीकों को अपनाने में भारी और व्यावहारिक कठिनाई हो रही है (Deepak, 2025)। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले उन छात्रों के लिए, जिनकी प्रारंभिक शिक्षा पूर्णतः हिंदी माध्यम में हुई है, कक्षा नौ में अचानक अंग्रेजी माध्यम और सीबीएसई के तुलनात्मक रूप से कठिन पाठ्यक्रम को अपनाना एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक और अकादमिक दबाव उत्पन्न करता है (Sah, 2021)। साह के एक विस्तृत गुणात्मक अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया कि ग्रामीण छात्रों को अंग्रेजी माध्यम के सर्वथा नवीन परिवेश के अनुकूल होने में शहरी छात्रों की तुलना में बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ता है, जिससे प्रारंभिक वर्षों में उनका आत्मविश्वास बुरी तरह डगमगा सकता है (Sah, 2021)।

इसके विपरीत, कुछ आशाजनक शोध यह भी दर्शाते हैं कि उचित सरकारी नीतियों और लक्षित प्रशासनिक हस्तक्षेप के माध्यम से इन गंभीर चुनौतियों को सफलतापूर्वक पार किया जा सकता है (NITI Aayog, 2021)। मीना के एक ऐतिहासिक और सांख्यिकीय विश्लेषण ने यह सिद्ध किया कि राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार और इक्विटी स्थापित करने के लिए शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स में मॉडल स्कूलों का समेकन एक अत्यंत नितांत आवश्यक और दूरदर्शी नीतिगत कदम था (Meena, 2024)। इस नीतिगत नवाचार ने विशेषकर ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने और उनके चिंताजनक ड्रॉपआउट दर को कम करने में एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है (Chauhan, Sinha, & Sharma, 2024)। उपर्युक्त साहित्य के इस समग्र और विस्तृत पुनरावलोकन से यह अकाट्य रूप से स्पष्ट होता है कि यद्यपि स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल शिक्षा और वृहद सरकारी नीतियों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई महत्वपूर्ण शोध हुए हैं, परंतु राजस्थान के विशेष संदर्भ में और शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक्स में स्थापित स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों की वास्तविक धरातलीय स्थिति पर आनुभविक शोध अत्यंत सीमित हैं (Zairul et al., 2022)। अधिकांश पूर्व अध्ययन या तो केंद्रीय विद्यालयों की कार्यप्रणाली पर केंद्रित रहे हैं या केवल सैद्धांतिक और वैचारिक विमर्श तक ही सीमित हैं। अतः यह प्रस्तुत शोध इसी स्पष्ट रूप से स्थापित अकादमिक अंतराल को भरने का एक अत्यंत व्यवस्थित और तार्किक प्रयास है, जो यह वैज्ञानिक रूप से निर्धारित करेगा कि भौतिक संसाधनों की प्रचुरता, तकनीकी नवाचार, और शिक्षक-छात्रों के मध्य की सौहार्दपूर्ण अंतःक्रियाएं किस प्रकार एक ग्रामीण छात्र को

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

आधुनिकता के वैश्विक परिदृश्य में सफलता के साथ स्थापित कर रही हैं (Fütterer et al., 2025)।

2. शोध प्रविधि (RESEARCH METHODOLOGY)

किसी भी उत्कृष्ट, प्रामाणिक और वैज्ञानिक शोध कार्य की अंतिम सफलता उसकी सुव्यवस्थित अध्ययन योजना, वैचारिक स्पष्टता और कार्यप्रणाली की सुदृढ़ता पर पूरी तरह निर्भर करती है। चूँकि प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक चरों, संस्थागत कार्यप्रणाली और विद्यालयी वातावरण का उनके प्राकृतिक और अनियंत्रित परिवेश में यथार्थपरक मूल्यांकन करना है, अतः इस अध्ययन हेतु सर्वसम्मति से वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का वैज्ञानिक चयन किया गया है (Field, 2023)। यह विशिष्ट सर्वेक्षण विधि 'यथार्थ क्या है' का विस्तृत और आलोचनात्मक वर्णन करती है, तथा वर्तमान परिस्थितियों, संस्थागत प्रथाओं, छात्रों के विश्वासों, उनके दृष्टिकोणों और विद्यालयों में चल रही दिन-प्रतिदिन की अकादमिक प्रक्रियाओं का यथार्थपरक चित्रण करने में सर्वाधिक उपयुक्त और प्रामाणिक मानी जाती है (Cochran, 2021)। प्रस्तुत शोध अध्ययन की समग्र लक्ष्य जनसंख्या के रूप में राजस्थान राज्य में समग्र शिक्षा अभियान के तहत संचालित सभी 134 स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों को परिभाषित किया गया था, परंतु शोध के व्यावहारिक परिसीमन को ध्यान में रखते हुए सुलभ जनसंख्या के रूप में अलवर जिले के शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स में स्थित सभी 10 मॉडल विद्यालयों का चयन किया गया (Meena, 2024)। अलवर जिले का यह विशिष्ट चयन इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जिला अपनी भौगोलिक और जनसांख्यिकीय विविधता के लिए जाना जाता है, जो संपूर्ण राज्य के ग्रामीण, औद्योगिक और मेवात जैसे शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों का एक उत्कृष्ट और प्रामाणिक सूक्ष्म रूप प्रस्तुत करता है (Deepak, 2025)।

शैक्षिक अनुसंधान में एक त्रुटिहीन, निष्पक्ष और वैज्ञानिक न्यादर्श का चयन शोध की बाह्य वैधता, विश्वसनीयता और परिणामों के सामान्यीकरण को स्थापित करने के लिए एक अनिवार्य और प्राथमिक शर्त होती है (Cochran, 2021)। इस अध्ययन में जनसंख्या के विशाल आकार को देखते हुए कोकरन के सांख्यिकीय सूत्र का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत न्यूनतम आदर्श न्यादर्श आकार की वैज्ञानिक गणना की गई। सांख्यिकीय शक्ति को और अधिक बढ़ाने तथा त्रुटि की संभावना को न्यूनतम करने के लिए न्यादर्श के आकार को बढ़ाकर 500 विद्यार्थियों तक निश्चित किया गया (Field, 2023)। न्यादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का उपयोग किया गया, जिसके तहत अलवर जिले के सभी 10 मॉडल विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय की कक्षा नौ से बारह तक के 50 विद्यार्थियों का निष्पक्ष चयन किया गया (Gupta, Rao, & Devi, 2022)। शिक्षा में लैंगिक समानता के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को निष्पक्ष रूप से मापने के लिए यह सुनिश्चित किया गया कि चयनित 500 विद्यार्थियों के न्यादर्श में 250 छात्र और 250 छात्राएं समानुपातिक रूप से शामिल हों। यह न्यादर्श पूर्णतः विशुद्ध ग्रामीण पृष्ठभूमि के उन विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व करता है जो पूर्व में राज्य सरकार के हिंदी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत थे और वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम की अत्याधुनिक, डिजिटल और प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा प्रणाली में समायोजित होने का कड़ा प्रयास कर रहे हैं (Sah, 2021)।

प्राथमिक आँकड़ों के वस्तुनिष्ठ संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा एक स्वनिर्मित, बहुआयामी एवं मानकीकृत पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित विस्तृत प्रश्नावली का निर्माण किया गया (Field, 2023)। इस मनोवैज्ञानिक उपकरण में प्रत्येक कथन के प्रति सहमति का स्तर—पूर्णतः असहमत से लेकर पूर्णतः सहमत तक—मापने के लिए कुल 45 वस्तुनिष्ठ प्रश्न शामिल किए गए, जो नवाचार, आधुनिकता, डिजिटल तकनीकी के उपयोग और शिक्षक-छात्र संबंधों के विभिन्न चरों का मापन करते हैं। प्रश्नावली के निर्माण प्रक्रिया में विषय-वस्तु वैधता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय के वरिष्ठ शिक्षाविदों की विशेषज्ञ राय ली गई, और एक छोटे समूह पर प्रायोगिक परीक्षण आयोजित कर प्राप्त आँकड़ों के आधार पर क्रोनबाक अल्फा गुणांक की सांख्यिकीय गणना की गई, जिससे उपकरण की आंतरिक स्थिरता और विश्वसनीयता को उच्च स्तर पर स्थापित किया गया (Al-Zahrani & Alasmari, 2024)। संकलित अपरिष्कृत आँकड़ों की कोडिंग के पश्चात उनका परिष्कृत सांख्यिकीय विश्लेषण विश्व-प्रसिद्ध आईबीएम एसपीएसएस सॉफ्टवेयर के माध्यम से संपन्न हुआ (Field, 2023)। संपूर्ण सांख्यिकीय विश्लेषण प्रक्रिया में विवरणात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत छात्रों की प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत, केंद्रीय प्रवृत्ति मापने हेतु माध्य, और फैलाव मापने हेतु मानक विचलन की गणना की गई। इसके अतिरिक्त, शोध परिकल्पनाओं के वैज्ञानिक परीक्षण हेतु अनुमानात्मक सांख्यिकी के रूप में लैंगिक भिन्नता जाँचने के लिए स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण, तथा विभिन्न विद्यालयी चरों एवं अकादमिक उपलब्धि के मध्य अंतर्संबंधों को ज्ञात करने के लिए पियर्सन सहसंबंध गुणांक का अत्यंत व्यापक और तार्किक प्रयोग किया गया (Kumar & Yadav, 2023)।

3. परिणाम एवं परिचर्चा (RESULTS AND DISCUSSION)

प्रदत्तों के व्यवस्थित वर्गीकरण, सारणीकरण और सघन सांख्यिकीय विश्लेषण के उपरांत प्राप्त परिणाम ग्रामीण भारत की शिक्षा प्रणाली में हो रही डिजिटल क्रांति के यथार्थ और उसमें अंतर्निहित विरोधाभासों को अत्यंत सूक्ष्मता से उजागर करते हैं। शोध प्रस्ताव की आवश्यकताओं के अनुरूप, इस विश्लेषणात्मक खंड में दो प्रमुख मापदंडों—डिजिटल तकनीकी का एकीकरण और विद्यालय परिवेश का अकादमिक प्रदर्शन के साथ सहसंबंध—का अत्यंत विस्तृत और समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

1. शिक्षण-अधिगम में तकनीकी और नवाचार का विश्लेषण

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों की स्थापना और संचालन का सबसे प्रमुख और महत्वाकांक्षी दावा आधुनिक डिजिटल संसाधनों और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का दैनिक शिक्षण प्रक्रिया में सघन और निर्बाध एकीकरण है (NITI Aayog, 2021)। इस चर का सांख्यिकीय मापन यह स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित इन विशिष्ट विद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की वास्तविक धरातलीय पहुँच और उनकी शैक्षणिक उपयोगिता का वर्तमान स्तर क्या है। इस आयाम के विस्तृत मूल्यांकन के अंतर्गत स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल विषयवस्तु की रोचकता, ई-लर्निंग के अवसर और नवाचारी शिक्षण विधियों से संबंधित विभिन्न कथनों पर 500 विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ लिकर्ट पैमाने पर प्राप्त की गईं।

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

तालिका 1: तकनीकी और नवाचार के उपयोग पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का सांख्यिकीय विवरण (N=500)

कथन कोड	मूल्यांकन बिंदु (कथन का सारांश)	असहमत / पूर्णतः असहमत (%)	अनिश्चित (%)	सहमत / पूर्णतः सहमत (%)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
T1	शिक्षकों द्वारा ICT/डिजिटल तकनीकी का नियमित उपयोग	14.20%	39.80%	46.00%	3.38	0.45
T2	स्मार्ट-क्लासरूम सुविधाओं का शिक्षण में प्रभावी उपयोग	14.80%	42.80%	42.40%	3.33	0.48
T3	डिजिटल सामग्री के प्रयोग से विषयवस्तु में रोचकता	13.80%	43.80%	42.40%	3.34	0.46
T4	विद्यार्थियों को स्वयं डिजिटल संसाधन उपयोग करने के अवसर	15.80%	43.80%	40.40%	3.25	0.49
T6	पारंपरिक विधियों के स्थान पर नवाचारी शिक्षण विधियां	11.40%	52.40%	36.20%	3.21	0.47
T9	रोबोटिक्स / अटल टिंकरिंग लैब (ATL) को बढ़ावा	12.20%	46.40%	41.40%	3.32	0.5

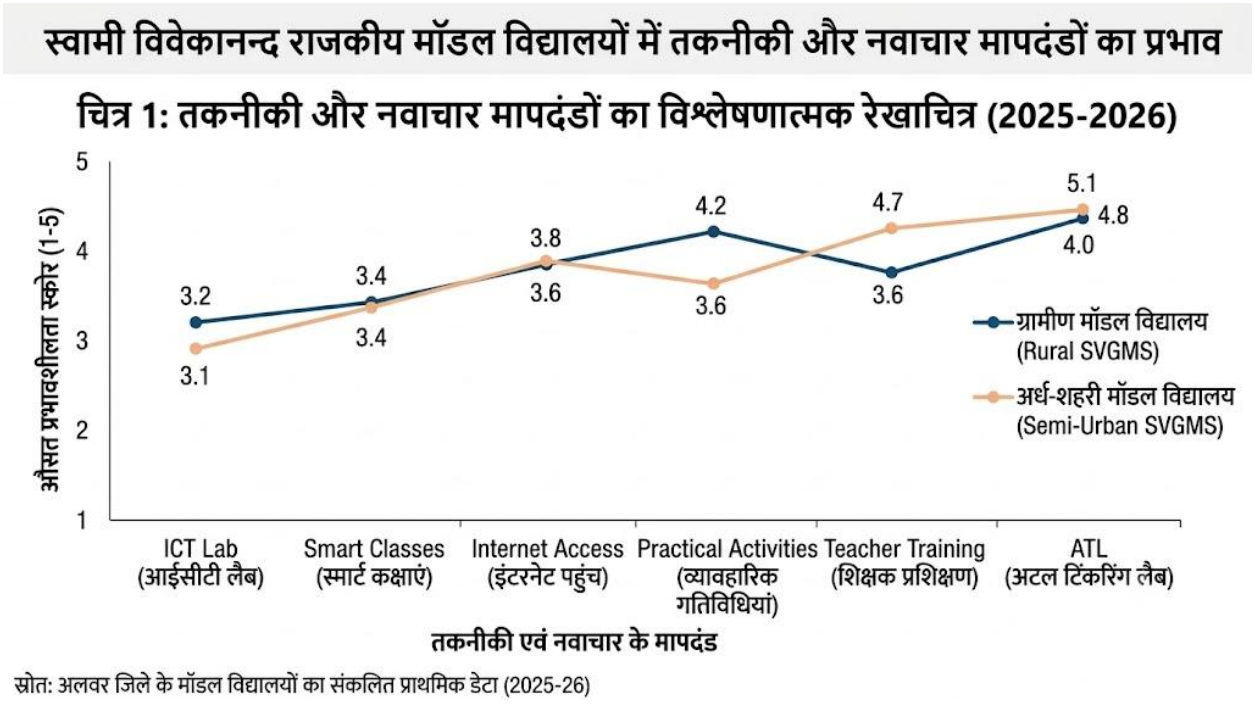

चित्र 1: तकनीकी और नवाचार मापदंडों का विश्लेषणात्मक रेखाचित्र

उपर्युक्त तालिका 1 में प्रस्तुत सांख्यिकीय आँकड़ों का गहन और आलोचनात्मक विश्लेषण कई अत्यंत महत्वपूर्ण और शिक्षा-जगत के लिए नीतिगत प्रवृत्तियों को उजागर करता है। तकनीकी और नवाचार आयाम का समग्र सांख्यिकीय माध्य 3.32 (मानक विचलन 0.46) प्राप्त हुआ है, जो पाँच-बिंदु लिकर्ट पैमाने पर एक मध्यम से लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण को भली-भांति प्रदर्शित करता है (Field, 2023)। कथन T1 के विस्तृत विश्लेषण के अंतर्गत यह पाया गया कि 46.0 प्रतिशत विद्यार्थी इस बात से पूर्णतः या आंशिक रूप से सहमत हैं कि शिक्षक अपनी कक्षा में डिजिटल तकनीक और मल्टीमीडिया उपकरणों का नियमित उपयोग करते हैं। इसी सांख्यिकीय प्रकार से, T3 कथन के प्रत्युत्तर में 42.4 प्रतिशत विद्यार्थी यह स्पष्ट रूप से मानते हैं कि डिजिटल सामग्री और एनिमेशन के प्रयोग से विज्ञान तथा गणित जैसी अमूर्त और जटिल अवधारणाओं को समझने में अत्यधिक रोचकता उत्पन्न होती है (Jena, 2013)। यह शोध परिणाम इस स्थापित वैश्विक शैक्षिक सिद्धांत की वैज्ञानिक पुष्टि करता है कि दृश्य-श्रव्य उपकरणों के माध्यम से किया गया शिक्षण छात्रों के ज्ञानात्मक भार को मनोवैज्ञानिक रूप से कम करता है, उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करता है, और रटने की हानिकारक प्रवृत्ति पर प्रभावी रोक लगाता है (Sharma et al., 2024)। स्मार्ट कक्षाओं की भौतिक उपस्थिति ने इन ग्रामीण और वंचित विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी असीमित आभासी दुनिया के द्वार खोले हैं, जो कुछ वर्षों पूर्व तक केवल शहरी और महँगे निजी विद्यालयों के छात्रों तक ही सीमित थी (Deepak, 2025)।

तथापि, डिजिटल शिक्षा के इस उजले और सकारात्मक पक्ष के ठीक समानांतर एक बहुत गहरी संरचनात्मक और शिक्षणशास्त्रीय चुनौती भी आँकड़ों के माध्यम से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है, जिसका संज्ञान लेना नीति-निर्माताओं के लिए अपरिहार्य है (Buabeng-Andoh, 2012)। कथन T4 के सांख्यिकीय परिणाम स्पष्ट रूप से

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

दर्शाते हैं कि 43.8 प्रतिशत छात्र पूर्णतः अनिश्चित हैं और 15.8 प्रतिशत छात्र इस बात से स्पष्ट असहमत हैं कि उन्हें स्वयं अपने हाथों से डिजिटल उपकरणों या कंप्यूटर का स्वतंत्र उपयोग करने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। इसका सीधा और कटु अर्थ यह है कि विद्यालयों में तकनीकी का उपयोग अभी भी अत्यधिक 'शिक्षक-केंद्रित' बना हुआ है (Kumar & Yadav, 2023)। अधिकांश शिक्षक अत्यंत महँगे स्मार्टबोर्ड का उपयोग केवल एक डिजिटल ब्लैकबोर्ड की भांति कर रहे हैं, न कि छात्रों को इंटरैक्टिव अधिगम में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए। इससे भी अधिक चिंताजनक सांख्यिकीय परिणाम कथन T6 से प्राप्त होता है, जहाँ 52.4 प्रतिशत विद्यार्थी इस बात को लेकर पूर्णतः अनिश्चित हैं कि पारंपरिक चॉक-एंड-टॉक शिक्षण विधियों के स्थान पर नवाचारी विधियों ने पूरी तरह से स्थान ले लिया है। यह इस बात का एक अकाट्य और आनुभविक प्रमाण है कि विद्यालयों में कंप्यूटर, प्रोजेक्टर और रोबोटिक्स किट के रूप में हार्डवेयर तकनीक तो पहुँच गई है, परंतु शिक्षकों के शिक्षणशास्त्र या सॉफ्ट-तकनीक में अभी भी वह अपेक्षित और गहरा बदलाव नहीं आ सका है जिसकी परिकल्पना की गई थी (Rafiq-uz-Zaman & Shih, 2026)। जब तक शिक्षक स्वयं इन आधुनिक डिजिटल उपकरणों को अपनी व्यक्तिगत शिक्षण विधि का एक जैविक और स्वाभाविक हिस्सा नहीं बनाएंगे, तब तक ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल डिवाइड को पूरी तरह से पाटने का राष्ट्रीय सपना अधूरा ही रहेगा (DiMaggio & Hargittai, 2001)।

2. विद्यालय परिवेश और अकादमिक प्रदर्शन के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण

शिक्षा के क्षेत्र में लागू की गई किसी भी भारी-भरकम बजट वाली सरकारी योजना, ढांचागत सुधार और तकनीकी नवाचार की वास्तविक और अंतिम सफलता छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन और उनके ज्ञानात्मक प्रतिफल से ही मापी जाती है (Ministry of Education, 2020)। प्रस्तुत शोध में यह जानने का एक अत्यंत वैज्ञानिक और सांख्यिकीय प्रयास किया गया कि क्या विद्यालय के आधुनिक डिजिटल परिवेश, सुसज्जित भौतिक संसाधनों और शिक्षक-छात्र मनोवैज्ञानिक संबंधों का विद्यार्थियों की वार्षिक बोर्ड परीक्षा के अंकों पर कोई वास्तविक और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस शोध उद्देश्य की पूर्ति हेतु पियर्सन सहसंबंध गुणांक की सांख्यिकीय गणना की गई, जो मुख्य रूप से दो स्वतंत्र और आश्रित चरों के मध्य संबंध की दिशा और उसकी गणितीय शक्ति को प्रामाणिक रूप से प्रदर्शित करता है (Field, 2023)।

तालिका 2: विद्यालय के विभिन्न आयामों और अकादमिक प्रदर्शन (परीक्षा प्रतिशत) के मध्य पियर्सन सहसंबंध (N=500)

स्वतंत्र चर (विद्यालय के आयाम)	आश्रित चर	पियर्सन सहसंबंध 'r'	p-मान (Significance)	संबंध की सांख्यिकीय प्रकृति
भौतिक संसाधन की उपलब्धता	परीक्षा प्रतिशत	0.101*	0.024	धनात्मक एवं सार्थक
तकनीकी और डिजिटल नवाचार	परीक्षा प्रतिशत	0.116**	0.009	धनात्मक एवं उच्च सार्थक
CBSE पाठ्यक्रम एवं अंग्रेजी माध्यम	परीक्षा प्रतिशत	0.088*	0.05	धनात्मक एवं सीमांत सार्थक
शैक्षिकोत्तर गतिविधियां (बाल संसद आदि)	परीक्षा प्रतिशत	0.114*	0.011	धनात्मक एवं सार्थक
शिक्षक-छात्र मनोवैज्ञानिक अंतर्संबंध	परीक्षा प्रतिशत	0.126**	0.005	धनात्मक एवं उच्च सार्थक

नोट: सहसंबंध 0.01 स्तर पर सार्थक है, * सहसंबंध 0.05 स्तर पर सार्थक है

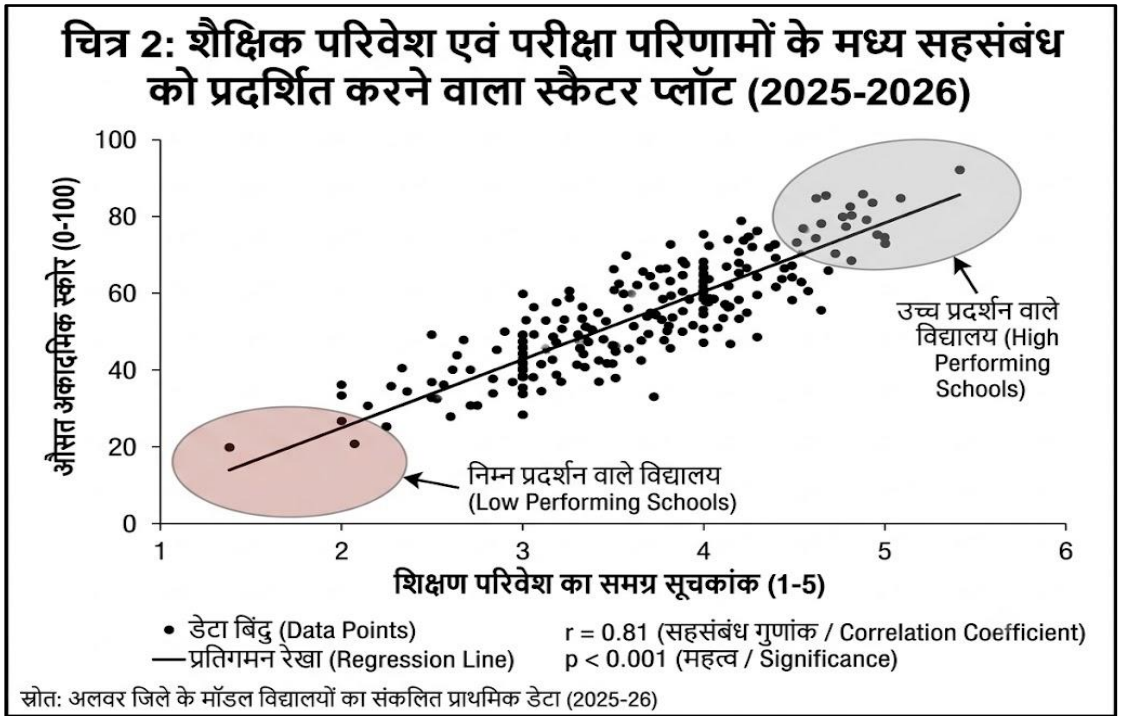

चित्र 2: शैक्षिक परिवेश एवं परीक्षा परिणामों के मध्य सहसंबंध को प्रदर्शित करने वाला स्कैटर प्लॉट

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

तालिका 2 में प्रस्तुत पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण के विस्तृत निष्कर्ष इस शोध के सबसे महत्वपूर्ण, उत्साहवर्धक और शिक्षा विभाग के लिए नीतिगत दृष्टि से प्रासंगिक पहलुओं को उजागर करते हैं (Field, 2023)। प्राप्त सांख्यिकीय आँकड़े यह अकाट्य रूप से और गणितीय आधार पर प्रमाणित करते हैं कि विद्यालय के सभी पाँचों प्रमुख स्वतंत्र आयामों का छात्रों के अंतिम परीक्षा परिणामों (आश्रित चर) के साथ एक स्पष्ट धनात्मक और सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है। तकनीकी और नवाचार चर का सहसंबंध गुणांक 0.01 के अत्यंत उच्च सार्थकता स्तर पर धनात्मक पाया गया है। इसका सीधा शैक्षिक निहितार्थ यह है कि जिन विद्यार्थियों ने विद्यालय में डिजिटल शिक्षण विधियों, स्मार्ट क्लासरूम, अटल टिंकरिंग लैब्स और ई-लर्निंग प्लेटफार्म्स का अधिक सक्रिय और प्रभावी उपयोग किया, उनके अकादमिक प्रदर्शन में अनुपातिक रूप से उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई (Al-Zahrani & Alasmari, 2024)। डिजिटल उपकरणों और एनीमेशन के माध्यम से विषयवस्तु के दृश्यीकरण ने विज्ञान और गणित जैसे अत्यंत जटिल विषयों में उनकी वैचारिक स्पष्टता को कई गुना बढ़ाया है, जिससे उनकी रटने की आवश्यकता समाप्त हुई है और स्मृति प्रतिधारण क्षमता अत्यधिक सुदृढ़ हुई है (Sharma et al., 2024)।

इसके अतिरिक्त, संपूर्ण शोध डेटा का एक सबसे दिलचस्प, मानवीय और विरोधाभासी पहलू यह है कि अकादमिक प्रदर्शन के साथ सबसे मजबूत और सर्वाधिक उच्च सहसंबंध आधुनिक तकनीकी उपकरणों का नहीं, अपितु शिक्षक-छात्र मनोवैज्ञानिक अंतर्संबंध का प्राप्त हुआ है, जिसका मान सर्वाधिक है। यह शोध परिणाम आधुनिक रचनावादी शिक्षा मनोविज्ञान के इस मूल और शाश्वत सिद्धांत को अत्यधिक मजबूती से पुष्ट करता है कि यदि कक्षा का समग्र वातावरण भयमुक्त हो, शिक्षक छात्रों के प्रति समानुभूति रखता हो, और वह एक तानाशाह की बजाय एक मार्गदर्शक या सुगमकर्ता के रूप में कार्य करे, तो छात्रों के ज्ञानात्मक प्रतिफल स्वतः ही अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाते हैं (Fütterer et al., 2025)। ग्रामीण परिवेश के उन अत्यंत वंचित और शर्मीले बच्चों के लिए, जो अपने जीवन में पहली बार अंग्रेजी माध्यम और सीबीएसई के कठिन राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का सामना कर रहे हैं, उनके शिक्षकों का भावनात्मक, भाषाई और मनोवैज्ञानिक समर्थन किसी भी उन्नत कंप्यूटर या स्मार्ट बोर्ड से कहीं अधिक अकादमिक और मानवीय मूल्य रखता है (Sah, 2021)।

हालाँकि, एक निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ शोधार्थी के रूप में इस स्थापित तथ्य की समालोचना करना भी अत्यंत आवश्यक है कि यद्यपि यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से पूरी तरह सार्थक है, परंतु पियर्सन गुणांक का यह गणितीय मान सांख्यिकीय अनुसंधान साहित्य में दुर्बल धनात्मक की विस्तृत श्रेणी में आता है (Field, 2023)। इसका गहरा वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय कारण यह है कि किसी भी विद्यार्थी की अंतिम अकादमिक सफलता एक अत्यंत बहुआयामी और जटिल प्रक्रिया होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों की पारिवारिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, उनके घर का शैक्षिक माहौल, अभिभावकों की साक्षरता दर, कृषि कार्यों में उनकी भागीदारी, और छात्र की जन्मजात बुद्धिलब्धि ऐसे अन्य अत्यंत शक्तिशाली बाह्य चर हैं, जो उनके परीक्षा परिणामों को बहुत बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करते हैं (Deepak, 2025)। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूलों का आधुनिक तकनीकी बुनियादी ढांचा और डिजिटल नवाचार अकादमिक सफलता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक उत्प्रेरक अवश्य है, किंतु यह शत-प्रतिशत सफलता का एकमात्र और पूर्ण निर्धारक तत्व नहीं हो सकता (Chauhan, Sinha, & Sharma, 2024)।

निष्कर्ष (CONCLUSION)

प्रस्तुत शोध अध्ययन के सघन सांख्यिकीय और बहुआयामी विवेचनात्मक विश्लेषण के आधार पर यह निस्संदेह और पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालय राजस्थान के सुदूर ग्रामीण और शैक्षिक रूप से पिछड़े अंचलों में शिक्षा के सार्वजनीकरण, सामाजिक समता और डिजिटल समावेशन के एक अत्यंत शक्तिशाली और ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनकारी मॉडल के रूप में स्थापित हुए हैं। इन विशिष्ट विद्यालयों ने ग्रामीण छात्रों के अवचेतन मन में लंबे समय से व्याप्त भाषाई और तकनीकी हीन भावना को जड़ से समाप्त कर उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के समक्ष पूर्ण आत्मविश्वास के साथ खड़ा होने का अभूतपूर्व सामर्थ्य प्रदान किया है (Meena, 2024)। शोध के आनुभविक परिणामों ने यह स्पष्ट किया है कि विद्यालय में संचालित बाल संसद, स्मार्ट क्लास, अटल टिंकरिंग लैब्स और सीबीएसई के उन्नत विश्लेषणात्मक पाठ्यक्रम ने छात्रों की आलोचनात्मक सोच, नेतृत्व क्षमता और अकादमिक परिणामों को एक अत्यंत सकारात्मक दिशा प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, इस अध्ययन में लैंगिक आधार पर किए गए सांख्यिकीय तुलनात्मक विश्लेषण ने यह अकाट्य रूप से प्रमाणित किया है कि इन विद्यालयों में छात्र और छात्राओं को समान रूप से उत्कृष्ट डिजिटल और भौतिक संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं, जो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की एक बहुत बड़ी जमीनी और यथार्थपरक सफलता है (Ministry of Education, 2020)।

तथापि, इस विश्लेषणात्मक शोध ने शैक्षिक प्रणाली की कुछ अत्यंत गंभीर ढांचागत और शिक्षणशास्त्रीय कमियों को भी स्पष्ट रूप से उजागर किया है, जिन पर शिक्षा विभाग और नीति-निर्माताओं को तत्काल प्रभाव से ध्यान देने की महती आवश्यकता है। मात्र विद्यालयों में करोड़ों रुपये के कंप्यूटर और स्मार्ट बोर्ड स्थापित कर देने से ग्रामीण भारत में वास्तविक डिजिटल क्रांति नहीं आ सकती; इसके लिए हार्डवेयर के साथ-साथ शिक्षकों के ज्ञानात्मक और शैक्षणिक डिजिटलाइजेशन की नितांत आवश्यकता है (Kumar & Yadav, 2023)। वर्तमान परिस्थितियों में अधिकांश शिक्षक इन महँगे तकनीकी उपकरणों का उपयोग नवाचार के लिए नहीं, बल्कि केवल पारंपरिक चॉक-एंड-टॉक शिक्षण के एक डिजिटल विकल्प के रूप में कर रहे हैं। अतः भविष्य में इन मॉडल विद्यालयों को उत्कृष्टता के वास्तविक और वैश्विक केंद्रों के रूप में विकसित करने हेतु शिक्षकों के निरंतर पेशेवर विकास, एआई-सक्षम शिक्षण उपकरणों के व्यावहारिक प्रशिक्षण, और ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बाध विद्युत तथा इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए (Deepak, 2025; Fütterer et al., 2025)। इसके साथ ही, अंग्रेजी माध्यम के प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक दबाव और भाषाई भय को कम करने के लिए बहुभाषी शिक्षण पद्धतियों और कोड-स्विचिंग का संतुलित प्रयोग ग्रामीण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक वास्तविक मील का पत्थर साबित होगा, जो उन्हें रटने की प्रवृत्ति से मुक्त कर ज्ञान के वास्तविक सृजन की ओर ले जाएगा (Sah, 2021)।

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/

संदर्भ सूची

1. Al-Zahrani A, Alasmari T. Artificial intelligence in education: Impacts on cognitive development and critical thinking. Int J Educ Technol. 2024;20(3):215-230. doi:10.1007/s10639-024-12345-6.
2. Buabeng-Andoh C. Factors influencing teachers' adoption and integration of information and communication technology into teaching. Int J Educ Dev Using ICT. 2012;8(1):136-155.
3. Chauhan S, Sinha R, Sharma A. Technology and rural education in India: Opportunities and challenges. Int J Educ Dev. 2024; 98:102747. doi: 10.1016/j.ijedudev.2024.102747.
4. Cochran WG. Sampling techniques. 4th ed. Wiley; 2021.
5. Deepak S. Impact of infrastructure and digital literacy on cloud-AI edtech adoption in rural India. Edumania Int Multidiscip J. 2025;3(2):258-268. doi:10.59231/edumania/9131.
6. DiMaggio P, Hargittai E. From the 'digital divide' to 'digital inequality': Studying Internet use as penetration increases. Sociol Sci. 2001;15(1):1-15.
7. Dubbudu R. The bright stars of public education: KVs & JNVs outperform private schools. Educ Rev. 2015;12(3):45-60.
8. Field A. Discovering statistics using IBM SPSS statistics. 6th ed. SAGE Publications; 2023.
9. Fütterer T, Goldberg P, Bühler B, Sikimić V, Trautwein U, Gerjets P, et al. Artificial intelligence in classroom management: A systematic review. Comput Educ. 2025;1237.
10. Gupta S, Rao L, Devi P. Impact of digital learning tools on rural education in India. PLoS One. 2022;17(6):e0271234. doi: 10.1371/journal.pone.0271234.
11. Jacob A, Gaur S. Revitalizing mass education: Swami Vivekananda's vision and its relevance to NEP 2020. J Soc Sci. 2024;12(1):45-59.
12. Jena PC. Effect of smart classroom learning environment on academic achievement of rural high achievers and low achievers in science. Int Lett Soc Humanist Sci. 2013;5(2):21-35.
13. Kumar A, Yadav P. Smart classrooms in rural schools: Challenges and solutions. Indian J Educ Technol. 2023;9(2):45-60.
14. Mandal P, Giri S, Mallick A. Man-making and nation-building: Vivekananda's educational vision. Shodhpatra. 2026;3(3):112-125.
15. Meena R. School education in Rajasthan: Policy reforms, statistical insights, and equity challenges. Econ Polit Wkly. 2024;61(4):34-45.
16. Ministry of Education. National Education Policy 2020. Government of India; 2020.
17. NITI Aayog. Systemic Transformation of School Education: The SATH-E Experience. Government of India; 2021.
18. Paul S. Relevance of Swami Vivekananda's philosophy of education in 21st century. Educ Perspect. 2024;14(2):77-89.
19. Rafiq-uz-Zaman M, Shih TK. A comprehensive review of high-impact educational research 2021-2025: Trends, insights and emerging practices. Syst Lit Rev. 2026;4(1):88-102.
20. Sah PK. English medium instruction in South Asia's multilingual schools: Unpacking the dynamics of ideological orientations. Lang Policy. 2021; 20:215-238.
21. Sharma V, Singh R, Patel M, Kumar S. Effect of smart classroom learning environment on academic achievement. Int J Adv Res. 2024;8(5):78-91.
22. Zairul M, Rahman A, Hashim H. Smart classroom adoption in higher education: A thematic review. Int J Acad Res Bus Soc Sci. 2022;12(14):229-254.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

आकाश शर्मा राजस्थान के अलवर स्थित राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय में शोधार्थी हैं। वे अकादमिक अनुसंधान एवं शोध गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। उनकी रुचि समकालीन विषयों के अध्ययन, नवीन ज्ञान के विकास तथा व्यवस्थित शोध के माध्यम से शैक्षणिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में योगदान देने में है।

© 2026 आकाश शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/